राजनीतिक भ्रष्टाचार का दस्तावेज : तबादला

डॉ. कमलेश, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला छावनी।

साहित्य, जीवन संघर्षों से उद्भूत भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति है। इसी आधार पर साहित्य को जीवन की व्याख्या भी कहा गया है। साहित्यकार अपनी कृति में अपने युग-परिवेश के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति देता है। साहित्य में किसी एक पक्ष की प्रमुखता होने पर भी अन्य पक्षों का चित्रण स्वतः ही आ जाता है। राजनीति जीवन का एक ऐसा ही विशिष्ट पक्ष है, जो जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है। इस संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम का कहना है, "राजनीति समाज का एक विशिष्ट पहलू है, जो विभिन्न कोणों से सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। वर्तमान जीवन प्रत्येक पग पर राजनीति से उद्वेलित है। सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति किसी भी स्थिति में राजनीति से अप्रभावित नहीं रह सकता।"[1] अतः कहा जा सकता है कि जैसे साहित्य का जीवन से अनिवार्य सम्बन्ध है, वैसे ही साहित्य का राजनीति से है।

राज्य व्यवस्था के संचालन के लिए जिस नीति-नियम का पालन किया जाता है, वह नीति-नियम राजनीति कहलाते हैं। राजनीति मुख्य रूप से तीन संदर्भों में जीवन और व्यक्ति को प्रभावित करती है। इसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष राजा अथवा नेता होता है, दूसरी व्यवस्था होती है और तीसरा यक्ष प्रशासन बाधा उत्पन्न करने वाले के लिए समुचित दंड विधान अथवा न्याय व्यवस्था कहलाती है। आलोच्य उपन्यास में यद्यपि राजनीति के इन सभी पक्षों का चित्रण हुआ है, तथापि प्रशासनिक व्यवस्था घर लेखक की विशेष आँख रही है। इसी विशेष आँख की भूमिका के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वुडरो विल्सन ने कहा है, "राजनीति प्रशासन के लिए कार्य निर्धारित करती है। राजनीति अपनी सत्ता बनाए रखने की चेष्टा करती है। वे चुनाव लड़ते हैं। प्रतिद्वंद्वी को हराते हैं। प्रशासन उन्हें नीति निर्धारित करने के लिए आवश्यक सामग्री एवं परामर्श देता है। नीति को कार्यान्वित करता है।"[2] इस प्रकार से प्रशासन और राजनीति भले ही भिन्न हों, परन्तु प्रायः एक होकर काम करते हैं। इनमें से किसी एक अर्थात् नेता अथवा राजनीति, प्रशासन अथवा अधिकारी वर्ग आदि अपने कर्त्तव्यबोध और नैतिकता से च्युत होगा, तो निश्चित रूप से जीवन और समाज भी अव्यवस्थिति और कलुषित होगा। यह अव्यवस्था और कलुषित ही प्रकारान्तर राजनीतिक अवमूल्यन कहलाता है। हन्टिंग्टन के अनुसार, "जब लोकतंत्र की प्रक्रिया अर्थात् लोकतांत्रिक व्यवस्था की कार्यशीलता में अधमता तथा भ्रष्टता

आ जाती है। शासक दल और इसके नेता लोकतान्त्रिक विचारों तथा मूल्यों से दूर होने लगते हैं। अधिनायकवादी दिशा की और बढ़ने लगते हैं। वे निरंकुश तरीके अपनाते हैं। लोकतंत्र के इस पतन को देश में राजनीति ह्रास समझा जाता है।"[3]

विवेच्य उपन्यास 'तबादला' इस राजनीतिक अवमूल्यन का जीवंत चित्रण करता है। यद्यपि यह राजनीति के समूचे संदर्भों को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से हमारे सामने लाता है, परन्तु मुख्यतः तबादले के पीछे राजनीति किस प्रकार से काम करती हुई नैतिकता और मूल्यों को धत्ता दिखाती है और धीरे-धीरे राजनीति के इस षड्यंत्र से त्रस्त और व्यस्त अधिकारी भी एक समय के बाद उसी अवमूल्यन का हिस्सा बनकर दोनों हाथों से उसे उलीचने लग जाते हैं। इसका विवेचन प्रस्तुत उपन्यास में निम्न रूप से हुआ है।

किसी भी देश की प्रगति और विकास के लिए वहाँ एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था का होना अनिवार्य है। शासन का अर्थ राजनीतिक व्यवस्था के प्रारूप और उस ढंग से है, जिसके द्वारा किसी राष्ट्र के विकास हेतु उसके आर्थिक व सामाजिक संसाधनों का यथेष्ट उपयोग सुनिश्चित करने के लिए शक्ति या सत्ता का प्रयोग किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारियों में इस व्यवस्था सफलता हेतु उसके आर्थिक व सामाजिक संसाधनों का यथेष्ट उपयोग सुनिश्चित करने के लिए शक्ति या सत्ता का प्रयोग किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारियों में इस व्यवस्था की सफलता के लिए ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा, नैतिकता आदि गुण होने चाहिए, परन्तु आज इनके स्थान पर स्वार्थपरता और भ्रष्टाचार, अनैतिकता जैसे अवमूल्यन उभरकर सामने आ रहे हैं। प्रशासनिक संस्थाएँ भीतर तक भव्यचार में डूब चुकी हैं। प्रशासनिक अधिकारी देश-सेवा के नाम पर समाज को लूट रहे हैं। भाई-भतीजावाद, साजिश, घूसखोरी, साम्प्रदायिकता, झूठ, फरेब, स्वार्थ, चापलूसी, कर्त्तव्यहीनता, अन्याय आदि बुराइयाँ इन्हीं प्रशासनिक अधिकारियों की देन है। जिसमें पूरी व्यवस्था को भ्रष्ट कर रखा है।

राजनीति में प्रत्येक नेता तथा अधिकारी के देश, समाज के प्रति कुछ कर्त्तव्य होते हैं। जिनका अनुपालन करके ही देश की व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान की जा सकती है। जिनमें कर्त्तव्य-निष्ठा, लगन-मेहनत, ईमानदारी प्रमुख हैं। परन्तु आज के नेता और नौकरशाही अपने ही कर्त्तव्यों को भूलकर स्वयं के सुख को अधिक महत्त्व देते हैं और परिणामस्वरूप नौकरशाही में कर्त्तव्य हीनता बढ़ती आ रही है। जिसका यथार्थ चित्रण आलोच्य उपन्यास में इस प्रकार मिलता है, "सार्वजनिक निर्माण विभाग के प्रान्तीय खंड के इस दफ़्तर में भी सुब कुछ दूसरे दफ्तरों की ही तरह था। बाबू भी दूसरे दफ्तरों की ही तरह थे। वे रोज देर से आते थे, आते ही चाय की दुकानों पर चले जाते थे, चाय पीकर पान खाते थे, दोनों के पैसे किसी ठेकेदार से दिलवाते थे, वापस

दफ्तर आकर गप्पे लड़ाते थे और फिर चाय की दुकान पर चले जाते थे।"[4] अत: कर्तव्य अवहेलना के कारण कार्यालयों की स्थिति दिन-ब-दिन बद से बदतर हो रही है।

घूसखोरी आज के समाज की प्रमुख प्रवृत्ति बनती जा रही है। पहले ईमानदारी से काम करना नैतिक मूल्यों में शामिल था। आज ईमानदारी केवल नाम मात्र की रह गई है। उसकी जगह बेईमानी, घूसखोरी, सिफारिश आदि ने ले ली है। वर्तमान शासन व्यवस्था में जो नौकरशाह अधिक भ्रष्ट हैं, राजनेताओं की हाँ में हाँ मिलाता है, वह तरक्की पाने का अधिकारी बन जाता है। प्रामाणिक नौकरशाही के प्रतिवेदन खराब करके उनका प्रमोशन रुकवा दिया जाता है और भ्रष्ट अधिकारी उच्च धन राशि नेताओं को देकर अपना तबादला उस जगह पर करवाते हैं। जहाँ पर उन्हें अधिक से अधिक चंदा

जमा करके नेताओं, मंत्रियों का मन जीतेगा उसको मनचाही जगह, मनचाहा पद मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में कमलकान्त अपना तबादला रुकवाने के लिए मंत्री जी को मोटी रकम देता है, "चर्चा थी कि कमलकांत ने तबादला रुकवाने के लिए बीस लाख खर्च किए थे। उसे अपना आदेश करवाते समय दस दिए थे। इस तरह अभी ग्यारह-बारह और देने पड़ेंगे।"[5] इस प्रकार रिश्वत के माध्यम सो लोग अपने बड़े से बड़े कामों को निकलवा लेते हैं।

आज के नौकरशाह राजनेताओं के हाथ में हाथ मिलाकर धन और ऊँचे पद प्राप्त कर रहे हैं। चापलूसी उनके स्वभाव का एक अंग बन गयी है। चापलूसी के कारण वे राजनेताओं का मन जीत लेते हैं और जनता का शोषण करते रहते हैं। ऊँचे पद के लिए वह किसी भी हद तक गिर सकते हैं, वे राजनेताओं के, अपने से बड़े अफसरों के तलवे भी चाटते हैं। उपन्यास में कमलकांत अपने तबादले के लिए मंत्री जी के पी.ए. कौशिक की खुशामद करता है, "कमलकांत ने ऐसे मौके के लिए जेब में एक लिफाफा पहले से तैयार कर रखा था। उन्होंने सबसे पहले उसी को निकाला और पी.ए. को बताया कि वह उनसे उम्र में छोटा है और यह तो उनका हक है कि उसकी पत्नी को जो कमलकांत की बहू हुई, दीवाली पर साड़ी पहनाए, चूँकि वे जल्दी में साड़ी लाना भूल गए और औरतों को अपनी पसंद की साड़ी खरीदने का मौका देना चाहिए, इसलिए बस साड़ी की कीमत दे रहे हैं।"[6] इस प्रकार अधिकारी लोग अपने काम निकलवाने के लिए अपने मातहतों को उपहार था, पैसे देते हैं और उनकी पूरी चापलूसी करते हैं।

भारतीय (हमारे) संविधान में सबको बराबरी का दर्जा किया गया है और बिना किसी जाति भेद के नौकरी पर रखा जाता है। आज साम्प्रदायिकता का जहर देश में इतना फैल गया है कि देश के सामने अनेक गंभीर समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। साम्प्रदायिकता के कारण राजनीति तथा प्रशासनिक क्षेत्र में आज हर जाति वर्ग के लोगों की अलग-अलग गुटबंदियाँ बनी हुई हैं। प्राय: जिस विभाग में जिस जाति के लोग अधिक हैं, वे अपने हित में नियमों, प्रशासन व्यवस्था को ढाल लेते हैं और वे दूसरी जाति के लोगों से भेदभाव पूर्ण व्यवहार करते हैं तथा उन्हें नीचा दिखाते हैं। उपन्यास में "उपाध्याय जी एक नम्बर के जातिवादी थे। उनके आते ही दफ्तर के ब्राह्मण, चपरासियों और बाबुओं का राज हो जाता। बेचारे ठाकुर-कायस्थ एक किनारे कर दिए जाते।"[7] इस प्रकार किसी एक जाति विशेष के लोगों का वर्चस्व दूसरों के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सम्पूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करता है।

वर्तमानकालीन शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कानून और न्याय व्यवस्था की आवश्यकता होती है। कानून का सीधा सम्बन्ध जनता से होता है। कानून का प्रमुख कार्य राज्य में शांति और सुव्यवस्था का निर्माण करना है। इस व्यवस्था को भंग करने वाले को सजा देना, न्याय व्यवस्था का कार्य है, परन्तु आज न्याय और कानून व्यवस्था केवल नाम मात्र की बनकर रह गई है। पुलिस अधिकारी, जज लोग तक भ्रष्ट हो चुके हैं, उनका ध्येय न्याय व्यवस्था को बनाए रखना न होकर न्याय को बेच अपनी जेब गर्म करना है। इसकी ओर उपन्यासकार आलोच्य उपन्यास में करता है, "जिन जज साहब के यहां मुकदमा था। उनकी शोहरत कुछ ऐसी थी कि चाँदी की जूती से कुछ भी करा लो, तो साहब सीतापुर वाले ताल्लुकेदार ने मिलने की जुगत भी भिड़ाई और गिन आए पूरे एक लाख रुपये।"[8] इस प्रकार न्याय व्यवस्था भ्रष्ट हो चुकी, जज अपने फैसले बेचते हैं।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रशासन तंत्र में ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का ह्रास हो चुका है। आज प्रशासनिक अधिकारियों की धन लोलुपता, चापलूसी, अनैतिकता, घूसखोरी जैसी वृत्तियों ने समूचे प्रशासन तंत्र को भ्रष्ट कर दिया है। जिसका जीवंत चित्रण विभूतिनारायण राय ने अपने इस उपन्यास 'तबादला' में किया है। प्रस्तुत उपन्यास में राजनेताओं के प्रशासनिक पक्ष में अनाधिकारिक और अनुचित हस्ताक्षेप को रेखांकित किया गया है, जो अधिकारियों के तबादले की प्रक्रिया के पीछे छिपे भ्रष्टाचार को उघाड़ने (प्रकट) करने वाला प्रखर दस्तावेज है।

सन्दर्भ :

1 जयप्रकाश कदम, रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ. 96
2 बी.एम. सिन्हा, लोक प्रशासनः सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ. 7
3 यू.आर. घई, आधुनिक राजनीतिक विश्लेषण, पृ. 397
4 विभूति नारायण राय, तबादला, पृ. 60
5 वही, पृ. 108-109
6 वही, पृ. 89
7 वही, पृ. 27
8 वही, पृ. 108